पाठ 22 सुब्रह्मण्य भारती

– लेखकमंडल

देश के स्वाधीनता संग्राम में जहाँ कुछ देशभक्तों ने अपने तेजस्वी भाषणों, नारों से विदेशी सत्ता का दिल दहलाया, वहीं कुछ ऐसे साहित्यकार भी थे जिन्होंने अपने काव्य–बाणों से विपक्षी को आहत किया। हिंदी में यदि 'मैथिलीशरण गुप्त', 'सोहनलाल द्विवेदी', 'सुभद्राकुमारी चौहान', 'रामधारी सिंह 'दिनकर' आदि ने अपनी काव्य–रचनाओं से भारतीय नवयुवकों के मन में देश–प्रेम के भाव भरे तो देश की अन्य भाषाओं में भी ऐसे देशभक्त कवि, साहित्यकार हुए जिनकी रचनाओं ने अँग्रेजी राज्य की जड़ें हिला दीं। तमिल भाषा के ऐसे ही कवि थे 'सुब्रह्मण्य भारती'। उनके संबंध में विस्तृत जानकारी इस पाठ में पढ़िए।

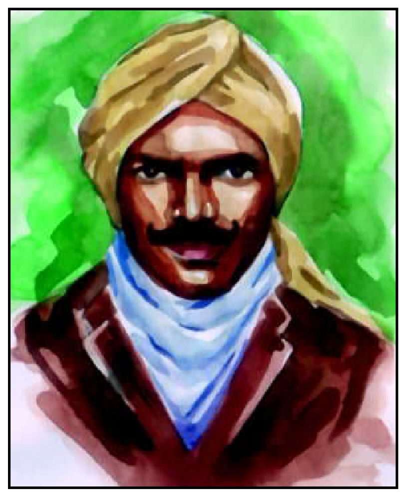

सुब्रह्मण्य भारती बीसवीं सदी के महान तमिल कवि थे। उनका नाम भारत के आधुनिक इतिहास में एक उत्कट देशभक्त के रूप में लिया जाता है। देश के स्वतंत्रता–संग्राम के लिए उन्होंने जिस शस्त्र का प्रयोग किया, वह था उनका लेखन, विशेषतया कविता। उनकी कविताओं ने तमिलवासियों को जाग्रत कर स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लेने के लिए प्रेरित किया।

सुब्रह्मण्य भारती का जन्म तमिलनाडु में एक मध्यवर्गीय परिवार में 11 दिसंबर, सन् 1882 को हुआ था। उनके पिता का नाम चिन्नास्वामी अय्यर और माँ का नाम लक्ष्मी अम्माल था। बचपन में भारती को सुब्बैया कहकर पुकारा जाता था। बचपन से ही वे कविताएँ लिखने और उनका पाठ करने के बहुत शौकीन थे। एट्टयपुरम् के राजा ने ग्यारह वर्षीय सुब्बैया को दरबार में कविता पाठ करने के लिए आमंत्रित किया। राजा के दरबार में एकत्र हुए विख्यात कवि उनका कविता पाठ सुनकर दंग रह गए। उन्होंने उन्हें 'भारती' की उपाधि से सुशोभित किया। इस तरह वे 'सुब्रह्मण्य भारती' के नाम से प्रसिद्ध हो गए।

जब सुब्बैया चौदह वर्ष के थे तभी उनका विवाह हो गया था। उनकी पत्नी चेल्लम्माल उस समय सात वर्ष की थीं। कुछ दिनों बाद सुब्बैया के माता–पिता का स्वर्गवास हो गया। सन् 1898 में भारती आगे पढ़ने के लिए वाराणसी (बनारस), अपनी काकी के पास, चले गए। बनारस में उन्होंने हिंदी, अँग्रेजी और संस्कृत भाषाएँ सीखीं।

बनारस में रहते हुए भारती के व्यक्तित्व में बहुत परिवर्तन आया। उन्होंने बड़ी–बड़ी पैनी मूँछें रख लीं। वे सिर पर पगड़ी पहनने लगे। उनकी विचारधारा में भी महान परिवर्तन आया। उनके हृदय में उग्र राष्ट्रीयता के बीज के कारण, उन्हें ब्रिटिश राज के बंधन में बँधे भारतीयों का दु:ख व उनकी पीड़ा महसूस होने लगी।

अपने साथ देश–प्रेम की भावना सुलगाए, देशभक्त कवि भारती चार वर्ष बाद बनारस से घर लौटे। जीविका के लिए वे चेन्नई (तत्कालीन मद्रास) में प्रसिद्ध तमिल दैनिक 'स्वदेशमित्रन्' में सहायक संपादक की हैसियत से नौकरी करने लगे, जिसके संस्थापक थे महान नेता जी.सुब्रह्मण्य अय्यर। अपने गीतों के माध्यम से भारतीय लोगों के हृदयों में राष्ट्रीयता की भावना जगाने लगे। जंगल की आग की तरह फैलते–फैलते ये गीत, शीघ्र ही राज्य के अधिकतम व्यक्तियों के हृदय तक पहुँच गए।

सन् 1907 में भारती ने सूरत में काँग्रेस के अधिवेशन में भाग लिया। उग्रवादी विचारों से प्रभावित होने के कारण, उन्हें यह विश्वास हो गया था कि नरमपंथी दृष्टिकोण से देश कभी भी स्वतंत्र नहीं हो सकता। उनके मन में बाल गंगाधर तिलक और विपिन चन्द्र पाल के प्रति बहुत सम्मान उत्पन्न हो गया। वे लोग क्रांतिकारियों की तरह भारत की स्वाधीनता के लिए संघर्ष करने को तत्पर थे। उन्हें लगा कि स्थिति क्रांतिकारी मोड़ लेना चाहती है।

भारती का देशभक्तिपूर्ण लेखन बहुत शक्तिशाली होता जा रहा था, फिर भी कोई उसे छापने को तैयार नहीं था। लोग सरकार के क्रोध से डरते थे। यहाँ तक कि 'स्वदेशमित्रन्' के संपादक ने भी उनके दृढ़, उग्रवादी विचारों को छापने से इंकार कर दिया। इसलिए भारती ने अपने पद से त्यागपत्र दे दिया और सन् 1907 में वे अपना ही 'इंडिया' नामक एक साप्ताहिक निकालने लगे। इसमें वे अपने विचारों को स्वतंत्रता से छापते और जनता उत्सुकता से उन्हें पढ़ती।

ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध आंदोलन भड़कता जा रहा था। शासकों ने इसे दबाने के लिए नेताओं और आंदोलनकर्त्ताओं को पकड़ना और जेल में बंद करना शुरू कर दिया। भारती किसी भी दिन अपनी गिरफ्तारी के वारंट का इंतजार कर रहे थे। उनके दोस्त और अनुयायी नहीं चाहते थे कि वे सींखचों के पीछे बंद हों इसलिए गिरफ्तारी से बचने के लिए, भारती सन् 1908 में पाण्डिचेरी चले गए। वहाँ भी ब्रिटिश सरकार के गुप्तचर, उनकी गतिविधियों पर कड़ी नजर रखे हुए थे। भारती को उन गुप्तचरों का पता लग गया था।

अपने दुखपूर्ण क्षणों में भी भारती का ईश्वरीय शक्ति पर से विश्वास नहीं हटा। इससे उन्हें पाण्डिचेरी में सबसे कठिन समय बिताने में सहायता मिली। जब उनके पास धन नहीं था, उनके प्रशंसकों ने आर्थिक रूप से और अन्य तरीकों से उनकी मदद की। यहाँ तक कि मकान का किराया न देने पर भी उनके मकान–मालिक ने उन्हें कुछ नहीं कहा।

भारती स्वयं किसी से सहायता नहीं माँगते थे। सहायता माँगने से उनके स्वाभिमान को ठेस लगती थी, किंतु गरीबी उनकी उदारता को कम नहीं कर पाई थी। एक बार उन्होंने अपना बहुमूल्य जरी के बॉर्डरवाला अंगवस्त्र तक, जिसे किसी अमीर प्रशंसक ने उन्हें दिया था, एक गरीब को दे दिया था। जब चेल्लम्माल ने इस बात के लिए उन्हें डाँटा तो वे हँस दिए और बोले कि उस गरीब आदमी पर वह अच्छा लग रहा था।

दूसरों की खुशी उनकी अपनी खुशी थी। वे अपने लेखन में अक्सर यह बात व्यक्त करते थे कि समस्त जीवित प्राणी उस सर्वोच्च शक्ति की अनुपम रचना हैं और उसकी नजर में हम सब बराबर हैं।

ऐसा लगता था कि जंगली जानवर भी भारती के सच्चे प्यार को पहचानते थे। एक बार, जब भारती और चेल्लम्माल चिड़ियाघर में घूम रहे थे, वे शेर के पिंजरे के बहुत करीब चले गए और जंगल के राजा को बुलाकर उससे बोले कि कविता का राजा तुमसे मिलने आया है। जवाब में शेर दहाड़ा और उसने भारती को अपना स्पर्श करने दिया। इस आश्चर्यजनक दृश्य को देखकर अन्य दर्शक भौंचक्के रह गए।

भारती को बच्चों से बहुत प्यार था। उन्होंने बच्चों के लिए 'द चाइल्ड साँग' (बच्चे का गीत) लिखा, उसे धुन दी और गाया भी।

भागो और खेलो, भागो और खेलो,
आलसी मत बनो, मेरे प्यारे बच्चो,
मिलजुलकर खेलो, मिलजुलकर खेलो,
कभी भी घबराओ नहीं, मेरे प्यारे बच्चो।
यही जीवन का ढंग है, मेरे प्यारे बच्चो।

भारती ने स्वतंत्र भारत के ऐसे लोगों की कल्पना की थी जो उच्च विचारों को आत्मसात कर उन्हें बढ़ावा दें। वे सहज ही पिछड़ी जाति के हिंदुओं और मुसलमानों से हिलमिल जाते थे।

अब तक गांधी–जी का सार्वभौमिक प्रेम व भाईचारे का संदेश देशभर में चारों ओर फैलने लगा था। उससे प्रभावित होकर भारती ने लिखा –

"रे मेरे मन ! मधुर
दया दिखा शत्रु पर"

उनका विजयनाद का गीत, जिस पर नृत्य भी किया जाता है, कहता है......

"मानव–मानव एक समान
एक जाति की हम संतान
यही दृष्टि है खुशी आज की
बजा नगाड़ा, करो घोषणा प्रेम–राज्य की।"

भारती ने गांधी–जी की प्रशंसा में कविता लिखी,'बहुत वर्षों तक जीओ, गांधी महात्मा...'

भारती गांधी–जी से चेन्नई (मद्रास) में सन् 1919 में केवल एक बार मिले थे और वह भी कुछ क्षणों के लिए। गांधी–जी ने राजा–जी और अन्य काँग्रेसी नेताओं और देशभक्तों से कहा था, "भारती देश का एक ऐसा रत्न है जिसकी सुरक्षा और संरक्षण करना चाहिए।"

लेकिन बहुत जल्दी ही उनका अन्त आ गया। भारती नियमित रूप से मंदिर जाते थे। वहाँ मंदिर के हाथी को नारियल देने में उन्होंने कभी भी चूक नहीं की। एक दिन हाथी मस्ती में था। इस बात से अनभिज्ञ भारती हमेशा की तरह नारियल खिलाने उसके करीब गए। हाथी ने उनके अपनी विशाल सूँड़ मारी और वे एक उखड़े हुए पेड़ की तरह गिर गए। वे बुरी तरह घायल हो गए। भीड़ जमा हो गई और उन्हें देखने लगी, पर कोई भी पास जाकर उन्हें बचाने की हिम्मत न जुटा पाया। यह खबर जंगल की आग की तरह फैल गई। जैसे ही यह खबर भारती के घनिष्ठ मित्र कानन के कानों तक पहुँची, वे भागे हुए आए और उन्होंने भारती को बचाया।

अच्छी चिकित्सा होने के कारण भारती की हालत कुछ हद तक सुधर गई। वे मन से अपने आपको स्वस्थ मानते थे और इसलिए यह विश्वास करने से इंकार करते थे कि उनकी सेहत गिर रही है। वे तब तक अपने क्षीण स्वर में गाते रहे, जब तक कि 12 सितंबर, सन् 1921 को उनकी आवाज़ सदा के लिए शांत न हो गई।

जब भारत स्वतंत्र हुआ तब भारती की रचनाएँ विस्तृत रूप से प्रकाशित होने लगीं। आज विश्व के पुस्तकालयों में उनकी किताबें संगृहीत हैं। अन्य भारतीय भाषाओं में अनुवाद होने के साथ–साथ अँग्रेजी, रूसी और फ्रेंच भाषा में भी उनकी पुस्तकों का अनुवाद हुआ है।

सुब्रह्मण्य भारती की याद में एट्टयपुरम् में 'भारती मंडप' स्थापित किया गया है। यहाँ, तमिल में महात्मा गांधी द्वारा लिखे शब्दों को पढ़ा जा सकता है, "जिन्होंने भारती को अमर बनाया, उन प्रयासों को मेरा आशीर्वाद।"

चेन्नई के समुद्रतट पर भारती की एक प्रतिमा है। ऐसा प्रतीत होता है कि अनंत लहरों का लयबद्ध नाद, उनकी कविताओं को गुनगुना रहा है।

भारती द्वारा रचित उनका आखिरी गीत, जो उन्होंने चेन्नई (मद्रास) के समुद्रतट पर हुई सभा में अपनी मृत्यु से कुछ सप्ताह पहले गाया था, उनके बहुत लोकप्रिय गीतों में से एक है–

"भारतीय समुदाय अमर हो
जय हो भारत–जन की जय हो।
भारत–जनता की जय–जय हो।
जय हो, जय हो, जय हो।"

टिप्पणी

तमिलनाडु 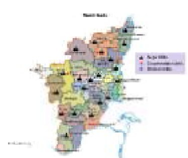 = दक्षिण भारत का एक राज्य। इसकी राजधानी चेन्नई है। यहाँ की राजभाषा 'तमिल' है।

बाल गंगाधर तिलक = काँग्रेस में उग्र पंथ के नेता। इन्होंने ही यह नारा दिया था –"स्वतंत्रता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है और हम इसे लेकर रहेंगे।''

विपिनचन्द्र पाल = लोकमान्य तिलक के सहयोगी, बंगाल में काँग्रेस के सर्वमान्य नेता।

पाण्डिचेरी = भारत के पूर्वी तट पर फ्रांस का उपनिवेश था। अब केन्द्र शासित राज्य है। यहाँ पोरोविल पर्वत पर महर्षि अरविन्द का आश्रम विश्वविख्यात है।

राजा जी = चक्रवर्ती राजगोपालाचार्य। स्वतंत्र भारत के प्रथम भारतीय गवर्नर जनरल।

अभ्यास

पाठ से

1. सुब्बैया का नाम भारती कब और क्यों पड़ा ?
2. बनारस में रहते हुए सुब्बैया के व्यक्तित्व में क्या परिवर्तन आया ?
3. भारती स्वयं का साप्ताहिक अखबार क्यों निकालने लगे ?
4. भारती अपने लेखन में अक्सर किस बात को व्यक्त करने पर जोर दिया करते थे ?
5. महात्मा गाँधी ने भारती जी के बारे में क्या कहा था ?
6. भारती ने स्वतंत्र भारत में कैसे लोगों की कल्पना की थी ?
7. हाथी के हमले के समय भारती को क्यों कोई बचा नहीं पाया ?

पाठ से आगे

1. तमिलनाडु के रहनेवाले भारती जी जब बनारस में पढ़ने के लिए आए तो उन्होंने तमिल के साथ–साथ हिंदी और अंग्रेजी भाषाएँ भी सीखीं। आप सोचकर लिखिए कि इन भाषाओं के सीखने से भारती जी को कौन–कौन से लाभ हुए होंगे।
2. आप पाठ में देखते हैं कि भारती जी दूसरों तक अपने विचारों को पहुँचाने के लिए कविता, साप्ताहिक पत्र आदि का सहारा लेते हैं। आप अपनी बातों को दूसरे तक पहुँचने के लिए किन–किन साधनों का उपयोग करना चाहेंगे ?
3. पाठ में बार–बार समाचार पत्रों का उल्लेख हुआ है। आप किन–किन समाचार पत्रों के बारे में जानते हैं और उनके पढने से आप को क्या लाभ होता है ? साथियों से चर्चा कर लिखिए।
4. भारती ने बच्चों के लिए गीत "चाइल्ड साँग लिखा और गाया। जिसमें भागो और खेलो आलसी मत बनो, मिल–जुलकर खेलो कभी घबराओ नहीं यही जीवन का ढंग है ! इन पंक्तियों में से देखें तो बच्चे क्या–क्या करते हैं और क्यों ?

7K7SCP

भाषा से

1. पाठ में इन शब्दों का प्रयोग हुआ है– माता–पिता, समुद्रतट, पुस्तकालय, बहुमूल्य, स्वर्गवास जो सामासिक शब्द कहे जाते हैं, अर्थात दो या दो से अधिक शब्दों से मिलकर बने हुए एक नवीन एवं सार्थक शब्द को समास कहते हैं। जैसे –'पुस्तक का घर' इसे हम 'पुस्तक का आलय या घर' भी कह सकते हैं। दूसरे शब्दों में यह भी कह सकते हैं कि

'समास वह क्रिया है, जिसके द्वारा कम–से–कम शब्दों मे अधिक–से– अधिक अर्थ प्रकट किया जाता है।

समास के छ रूप देखने को प्रायः मिलते हैं –

1. तत्पुरुष समास, 2. कर्मधारय समास, 3. अव्ययीभाव समास, 4. द्वंद्व समास, 5. बहुव्रीहि समास, 6. द्विगु समास।

7HC5RL

तत्पुरुष समास :– पुस्तकालय– पुस्तक का आलय, समुद्रतट–समुद्र का तट तत्पुरुष समास के उदाहरण हैं। इस समास का दूसरा पद अर्थात् उत्तर पद प्रधान होता है अर्थात् विभक्ति का लिंग, वचन दूसरे पद के अनुसार होता है इसका विग्रह करने पर कर्ता व सम्बोधन की विभक्तियों(ने,हे,ओ,अरे) के अतिरिक्त किसी भी कारक की विभक्त प्रयुक्त होती है। जैसे– सेनापति –सेना **का** स्वामी, शरणागत शरण **में** आया हुआ, सत्याग्रह –सत्य **के लिए** आग्रह, जलज – जल **में** जन्मा हुआ।

कर्मधारय समास– बहुमूल्य, स्वर्गवास, सज्जन, दहीबड़ा कर्मधारय समास के उदाहरण हैं। जिस समास का उत्तरपद प्रधान हो और पूर्वपद तथा उत्तरपद में विशेषण–विशेष्य अथवा उपमान–उपमेय का संबंध हो वह कर्मधारय समास कहलाता है। जैसे– कमलचरण–कमल **जैसा** चरण, महाराजा – महान **है जो** राजा, महादेव–महान **है जो** देव, विद्याधन–विद्या **रूपी** धन।

द्वंद्व समास–दोनों पद प्रधान होते है। दोनों पद प्रायः एक दूसरे के विलोम होते है, पर सदैव नहीं। इसका विग्रह करने पर और अथवा या का प्रयोग होता है । जैसे माता पिता–(माता **और** पिता) लोटा–डोरी– (लोटा **और** डोरी) पुस्तक से इन प्रकार के समास के उदाहरण को खोज कर लिखिए।

2. नीचे लिखे शब्दों में से जो अव्यय शब्द न हों उन्हें चिह्नित कर लिखिए–
   - अरे, वाह, जूता, और, तथा, शेर, शायरी
   - किन्तु, लड़का, परन्तु, कार्य, बल्कि, धीरे–धीर
   - कन्या, इसलिए, अतः एवं, पत्र, शब्द, अतएव
   - सीख, सोना, अवश्य, यदि, वाह, अर्थात, व, आदि
3. एक ही अर्थ को प्रकट करनेवाले शब्द को समानार्थी या पर्यायवाची शब्द कहते हैं। बॉक्स में कुछ शब्द और उनके समानार्थी दिए गए हैं उनकी सही जोड़ी बनाइए–

स्वतंत्र, समुद्र, निलय, मनुष्य, भारती, वाराणसी, सरस्वती, जगत, वसुधा, निर्बल, आजाद, सागर, क्षीण, धरती, भव, बनारस, मानव, गृह।

योग्यता विस्तार

1. 'वन्दे मातरम्' और 'सारे जहाँ से अच्छा हिन्दोस्ताँ हमारा' भारत के प्रसिद्ध देश–भक्ति के गीत हैं। इन गीतों को खोजकर याद कीजिए और इनके रचनाकारों के सम्बन्ध में जानकारी लीजिए।

7HL1T9

2. भारती जी ने साहित्य–रचना के माध्यम से स्वतंत्रता–आन्दोलन में सक्रिय सहयोग दिया। हिन्दी साहित्यकारों ने भी अपनी साहित्यिक रचनाओं के माध्यम से यही कार्य किया। उन साहित्यकारों के नाम लिखिए और उनकी देश–प्रेम की कुछ रचनाएँ पढ़िए और कक्षा में सुनाइए।

●●●

सड़क सुरक्षा

"जीवन अनमोल है, सावधान रहें सुरक्षित रहें"

1. हमेशा सड़क की बायीं ओर चलें।
2. यदि किसी वाहन से आगे निकलना हो (Overtake) तो उसके दाहिने तरफ से निकलें।
3. जेब्रा क्रॉसिंग से ही सड़क पार करें।
4. छोटे बच्चे अपने बड़ों का हाथ पकड़कर सड़क पार करें।
5. सड़क पर चलते वक्त मोबाइल का इस्तेमाल न करें।
6. वाहन चलाते समय मोबाइल पर बात न करें।
7. नशे की हालत में वाहन न चलाएँ।
8. ट्रैफिक लाइट का पालन करें।
9. विद्यालय, अस्पताल, मंदिर आदि के पास धीमी गति से गाड़ी चलाएँ।
10. गाँव/शहर (रिहायशी बस्तियों से गुजरते समय गाड़ी की गति 20 कि.मी. प्रति घंटा रखे।
11. अंधे मोड़ पर गाड़ी की गति धीमी रखें एवं हार्न का इस्तेमाल करें।
12. सड़क किनारे लिखे निर्देशों का पालन करें।
13. 'दुर्घटना से देर भली' इस सूत्र वाक्य का स्वयं व परहित में अनिवार्य रूप से पालन करें।
14. हेलमेट एवं सीट बेल्ट का उपयोग करें।

यातायात नियमों का पालन अवश्य करें।

शब्दकोश

शब्दकोश में शब्दों का संयोजन तथा उनके अर्थ समझिए। रिक्त स्थानों पर, बॉक्स में दिए गए, पूर्व में पढ़े शब्द और उनके अर्थ, शब्द कोश के क्रम में लिखिए।

अ

अइहैं – आएँगे
अकर्मण्यता – निकम्मापन
अकिंचन – तुच्छ, छोटा
.... – ....
अक्षुण्य – बिना टूटे, अखण्डित
अगोचर – जो दिखाई न दे
.... – ....
अजैविक – जिनका सम्बन्ध जीवों से न हो
अट्टालिका – अटारी
अटूट – न टूटनेवाला, दृढ़, मजबूत
अंतिम घड़ियाँ – मृत्यु का आखिरी क्षण
अनश्वर – जो कभी नष्ट न हो, जिसका नाश न हो ।
अनर्गल – व्यर्थ, बेकार
अनभिज्ञ – जिसकी जानकारी न हो
.... – ....
अनिश्चय – निश्चय नहीं
अनुकरणीय – अपनाने योग्य
अनुराग – प्रेम
अनुपम – जिसको उपमा न दी जा सके, जिसकी समानता न हो
.... – ....
अपरिमित – जिसकी सीमा न हो
.... – ....
अभिमान – घमंड
.... – ....
अमराई – आम का बगीचा
अवधि – समय–सीमा
अवस्था – हालत
.... – ....
.... – ....
अश्रु – आँसू
असहनीय – जो सहन न किया जा सके
असामान्य – जो मामूली न हो, विशेष

अखिल, अजीव, अनाथ, अचल, अनूठी, अपूर्ण, अभाव, अभियान, अमिय, अविकल, अशिव

आ

.... – ....
आँखें भर आना – आँखों में आँसू आ जाना
आँजना – लगाना (काजल आदि)
आकर्षण – मन को अपनी ओर खींचनेवाला
आक्रमण – हमला
.... – ....
आगत – आया हुआ
आगमन – आना
.... – ....
.... – ....
आच्छादित – ढँकी हुई
आतंक – भय, उपद्रव
.... – ....
आतुरता – व्याकुलता, अकुलाहट
आदि – आरंभ, पहले
आदी – अभ्यस्त होना
आधीन – किसी के वश में होना
आध्यात्मिक – आत्मा– परमात्मा संबंधी
आभार – कृतज्ञता
आमंत्रित – बुलाया गया
आमोद – प्रसन्नता
आराध्य – पूज्य
आलिंगन – गले लगना, बाहों में भर लेना
आवेश – जोश
आयाम – फैलाव, विस्तार
आरोप – इलजाम, दोष लगाना
आर्थिक – धन से संबंधित
आशय – इच्छा रखना
आशीष – आशीर्वाद
आस्तीन – कमीज या कुर्ते की बाँह

आधार, अजीब, आतंकवाद, आग्रह, आघात, आँखें दिखाना, आकांक्षा

इ

इंदु – चंद्रमा
इंद्रप्रस्थ – महाभारत काल का एक प्रसिद्ध नगर जो दिल्ली के निकट था

इज्जत – सम्मान
इति – अंत
इत्यादि – वगैरह

ई

ईख – गन्ना
ईश – ईश्वर
ईर्ष्या – जलन
ईर्ष्यालु – जलन रखनेवाला

उ

उच्च – ऊँचा
उड़ा देना – खत्म कर देना
उत्सव – त्यौहार
.... – ....
.... – ....
उपरान्त – बाद में
उपलब्धियाँ – प्राप्तियाँ
उपासना – आराधना, पूजा–सेवा करना
.... – ....
उलाहना – अटकाव, झंझट
उलूक – उल्लू

उत्सुक, उन्नत, उभय

ऊ

ऊँघ – नींद का झोका
ऊटपटाँग – उल्टा–सीधा काम

ए, ऐ

एकत्रित – इकट्ठे
.... – ....
.... – ....
.... – ....
.... – ....

एकलव्य, एकमत, ऐश्वर्य, ऐक्य

ओ

ओत–प्रोत – भरा हुआ
.... – ....
.... – ....

ओष्ठ, ओसारा,

औ

.... – ....
.... – ....
औषधि – दवा

औषधालय, औद्योगिक

क

कंचन – सोना
.... – ....
कटि – कमर
कतार – पंक्ति
कदाचित – शायद
.... – ....
कमरिया – कम्बल
कर – हाथ, टैक्स
.... – ....
काक – कौआ
.... – ....
कान पकना – कोई बात सुनते–सुनते ऊब जाना
काफिला – यात्रियों का समूह
कारावास – जेल, कैदखाना, बंदीगृह
कालिंदी – जमुना/यमुना (नदी का नाम)
कालिमा – अँधेरे का कालापन
किंकर्त्तव्यविमूढ़ होना – क्या करें, क्या न करें, निश्चय न कर पाना
.... – ....
.... – ....
कुलीन – अच्छे परिवार का
कृति – रचना
केंद्रित करना – किसी एक बिंदु पर ध्यान एकाग्र करना
कोप – क्रोध
क्षत–विक्षत – बुरी तरह घायल,

किश्ती, कलरव, काजी, कीट, कगार, कदापि,

ख

.... – ....
.... – ....
खड्ग – तलवार

खतरे की घंटी – चेतावनी देना
खपत – उपयोग
.... – ....
खरामा–खरामा – धीरे–धीरे
खिताब – उपाधि
.... – ....
खिसक जाना – चुपके से चले जाना
.... – ....
खुसुर–फुसुर – बिना आवाज किए बातें करना
.... – ....
खेल बनाना – मजाक बनाना
.... – ....

खलल, खुदा, खग, खैर, खंजर, खर, खिन्न

ग

....
गतिरोध – बाधा
गला भर आना – भावुक हो जाना
ग्लानि – पछतावा, पश्चाताप
गिरि – पर्वत, पहाड़
....
गुप्तचर – जासूस
.... – ....
गूढ़ – रहस्यपूर्ण

ग्वारन – ग्वाले, गाय चरानेवाले

गंजा, गुंजाइश, गुबारा, गंध

घ

....
घटक – अंग
घट–घट – प्रत्येक हृदय में
घन – बादल
घनघोर – बहुत अधिक
घनेरी – बहुत अधिक
....
घाघ – भारी चालाक व्यक्ति
घाटी – दो पर्वतों के बीच का गहरा भू–भाग
.... – ....
.... – ....

घपला, घालमेल, घात, घंटिका

च

.... – ....
चक्का बँधा होना – स्थिर न रहना
चना–चबेना – सूखे, भुने खाद्य पदार्थ
....
चमन – उद्यान, बगीचा
चलायमान – गतिमान
....
चातुरी – चतुराई
....
चिरन्तन – पुराना, पुरातन
चीत्कार – दुखभरी, ऊँची आवाज
....
चुभन – चुभने का दर्द
....
चेष्टा – प्रयास
चैन – संतुष्टि, आराम
चैन आना – मन शान्त होना,

चपत, चहल–पहल, चुनौती, चेतना, चिर, चंद

छ

.... – ....
.... – ....
छटा – दृश्य, चमक
.... – ....
छिन्न–भिन्न होना – बिखर जाना
छींकौ – सींका
.... – ....
छुद्र – छोटी

छूँछी, छुआछूत, छग, छत्र, छंद

ज

.... – ....
जंजीर – बेड़ी
जगत – संसार, दुनियाँ
जन साधारण – साधारण जनता
जनानी – औरत, औरतों की
.... – ....

जमात – एक तरह के लोगों का समूह
.... – ....
जलचर – जल के जीव–जन्तु
जलवृष्टि – पानी गिरना, वर्षा होना,
जागरूक – सजग
जायो – पैदा किया
जिय – मन
.... – ....
जैविक – जीवों, प्राणियों से सम्बन्धित
.... – ....
जोर – दबाव, जबर्दस्ती
जोरो – जोड़कर
जोशांदा – सर्दी, जुखाम दूर करने की दवा
ज्वर – बुखार
.... – ....

जंजाल, जमघट, जयंती, जंग, जोखिम, जिहाद, ज्योतिष,

झ

.... – ....
.... – ....
.... – ....
.... – ....
झिड़की – डाँट, डपटना
झुटपुटा – सुबह जब कुछ उजाला, कुछ अँधेरा हो

झंकार, झिझक, झंझट, झाड़

ट

.... – ....
.... – ....
टहल – सेवा, चाकरी
.... – ....
.... – ....
टोटा – कभी
.... – ....

टालमटोल, टोह, टैक्सी, टंकण, टक्कर

ठ

.... – ....
.... – ....
.... – ....
.... – ....
ठिठक जाना – संकोचपूर्वक रुक जाना

ठिकाना, ठट्ठा, ठग, ठसक

ड

.... – ....
.... – ....
.... – ....
.... – ....
डोम – एक अनुसूचित जाति जो श्मशान में चिता जलाने का काम करती थी।

डंके की चोट कहना, डगर, डील–डौल, डंठल,

त

.... – ....
.... – ....
तत्काल – उसी समय, तुरंत
तृण – तिनका, घास
तंदुरुस्त – स्वस्थ
तृप्ति – संतुष्टि
तथाकथित – ऐसा कहा हुआ`
तत्परता – शीघ्रतापूर्वक
तन्मय – लीन
तन्मयता – लीन होना
तपस्या – कठिन साधना
तमाशा बनाना – हँसी का पात्र बनाना
तसल्ली देना – धैर्य बँधाना
ताप – गर्मी
तापित – तपा हुआ
.... – ....
ताल – तालाब
.... – ....
.... – ....
.... – ....

ताम्र, तिमिर, तंत्र, तुरंग, तीक्ष्ण, तंत्र–मंत्र

थ

थका–हारा – थकावट से चूर
.... – ....
.... – ....

थल, थर्राना

द

दंडसंहिता	–	सजा देनेवाले नियम
....	–	....
दरख्त	–	वृक्ष
दर–दर	–	द्वार–द्वार
दर्प	–	घमंड
....	–	....
दशक	–	दस वर्ष की अवधि
....	–	....
दामन	–	आँचल
दिलचस्पी	–	रुचि
दिलीप	–	रघुकुल के एक सम्राट
दीर्घ	–	लंबा समय
दीर्घजीवी	–	लंबे समय तक जीनेवाले
दीर्घायु	–	लंबी आयु
दुखद	–	दुख देनेवाला, कष्टप्रद
....	–	....
दुर्गन्ध	–	बदबू
दुर्गम	–	जहाँ जाना बहुत कठिन हो
....	–	....
दृष्टिपात	–	देखना
देशद्रोही	–	देश से द्रोह करनेवाला
....	–	....
....	–	....

दंत, दसमुख, दुर्गति, दृष्टि, द्युति, दबंग, दैत्य,

ध

....	–	....
....	–	....
धरातल	–	जमीन पर
....	–	....
धूर्त	–	कुटिल
धूर्तता	–	कुटिलता
....	–	....
धेनु	–	गाय
....	–	....

धीर, धंधा, धूमकेतु, धरा, ध्येय

न

नभ	–	आकाश
नभ–चुम्बी	–	बहुत ऊँचे, आकाश को चूमने वाला
नत होना	–	झुकना
....	–	....
नाती	–	लड़की का लड़का, लड़के का लड़का
नादान	–	नासमझ
....	–	....
निखार आना	–	अधिक सुंदर लगना
निरन्तर	–	लगातार
निराधार	–	आधारहीन
निर्जन	–	सुनसान
निर्बुद्धि	–	मूर्ख, बुद्धिहीन
निर्भर	–	आश्रित, अवलंबित
निर्वासन	–	निकालना (देश निकाला)
निश्चेष्ट	–	निष्क्रिय
निश्छल	–	छलरहित, बिना कपट के
निश्शंक	–	बिना किसी शंका के, निस्संदेह
....	–	....
निष्काम	–	बिना कामना के
निष्ठा	–	लगन
नीड़	–	घोंसला
....	–	....
नीरोग	–	रोग रहित , बिना रोग के
नूपुर	–	घुँघरू (महिलाओं के पाँव का गहना)
....	–	....

नीरव, नृप, नर, नाभि, निष्कलंक

प

....	–	....
....	–	....
पखेरू	–	पक्षी
पतियायो	–	विश्वास कर लिया
परकाज	–	दूसरों के काम
परकोटा	–	मकान/बाड़ी/भूमि के चारों तरफ घिरा हुआ क्षेत्र, घेरा
परास्त	–	हार
परिवर्तित	–	बदला हुआ
पर्यटन	–	भ्रमण, घूमना

पाछे	–	पीछे
पाटलीपुत्र	–	वर्तमान पटना नगर
पाद–प्रक्षालन	–	चरण धोना
पाहन	–	पत्थर
....	–	....
पीड़ा	–	कष्ट, दु:ख
पुरंदर	–	इंद्र
पुरातत्वविभाग	–	प्राचीन ऐतिहासिक स्थलों, की देखरेख करनेवाला विभाग
पेशगी	–	अग्रिम राशि
पैशाचिक	–	राक्षस जैसा, क्रूर
....	–	....
पोता	–	पुत्र का पुत्र
प्रकांड	–	बहुत बड़ा, उत्तम
प्रखर	–	तेज
प्रच्छन्न	–	छुपा हुआ
प्रणयन	–	रचना, ग्रन्थ लिखना
प्रतिज्ञा	–	संकल्प, शपथ
प्रतिध्वनि	–	आवाज का वापस आना/लौटकर गूंजना
प्रतिबद्ध	–	बँधा हुआ
प्रतिशोध	–	बदला
प्रतिष्ठा	–	सम्मान, इज्जत
प्रदूषित	–	जो दूषित हो गई हो
प्रफुल्लता	–	अति प्रसन्नता
प्रयत्न	–	कोशिश, प्रयास, उपाय
प्रवाहित	–	बहता हुआ
प्रशासनिक	–	शासकीय
प्राण पखेरू उड़ना	–	मृत्यु होना, मरना
प्रावधान	–	व्यवस्था
प्रेरणा	–	उकसाने की क्रिया
....	–	....

पंथ, पंकज, पिशाच, पोत, प्रोत्साहन

फ

....	–	....
....	–	....
फरार	–	लापता या, भागा हुआ व्यक्ति
....	–	....
फुरि	–	सांच, सच, सत्य
....	–	....

फक्कड़, फरियाद, फौज, फंदा

ब

....	–	....
बंदी छोर	–	बंधन खोलनेवाला
बख्श देना	–	क्षमा कर देना
बछल	–	वत्सल, गाय का बछड़े के प्रति जैसा प्रेम
बटोहिया	–	राहगीर
बतियाना	–	बातचीत करना
बरबस	–	जबर्दस्ती
बलवती	–	अधिक प्रबल
बलात	–	बलपूर्वक
बलिदान	–	कुर्बानी
बहियाँ	–	बाँह, भुजाएँ
बात की सँभार	–	वचन की रक्षा, बात को सँभाल के
बाध्य	–	विवश
बाला	–	युवती, बालिका
बावजूद	–	इसके होते हुए भी
बिनवै	–	विनती करता है
बियापे	–	अनुभव होता है
बुजुर्ग	–	वृद्ध, बूढ़े
....	–	....
....	–	....
बैन	–	वचन
बैजन्तीमाल	–	एक प्रकार की माला, जिसमें पाँच रंग के फूल होते हैं, विजयमाल
....	–	....

बुध, बैरागी, बुनियादी, बंदी

भ

....	–	....
भय	–	डर
भरमाकर	–	बहकाकर
....	–	....
भाँड़ा फूट जाना	–	रहस्य प्रगट हो जाना
भाँज दो	–	तेज कर दो
....	–	....

भाल	–	मस्तक
भाष्यकार	–	मूल ग्रंथ की व्याख्या लिखने वाला
....	–	....
भूत उतारना होगा	–	घमंड चूर करना होगा
भूमिगत	–	भूमि के अन्दर, जमीन के भीतर
....	–	....
भृकुटी	–	भौंह
भोटदेशी	–	भोट प्रदेश के रहने वाले,
भोर	–	सुबह
....	–	....

भव, भार, भंजक, भुजंग, भूलभुलैया, भौतिक

म

....	–	....
मंद	–	धीमा
मंदाग्नि	–	पाचन शक्ति का बिगड़ जाना,
मंदित	–	मढ़ा हुआ
मझारन	–	मध्य
मधुमेह	–	डायबिटीज नामक रोग, जिसमें पेशाब के साथ शक्कर भी आती है।
मधुवन	–	गोकुल के आसपास की भूमि, कृष्ण का रासलीला–स्थल
मनहर	–	मन को हरन करनेवाला, लुभाने वाला
मनीषी	–	ज्ञानी, पंडित
मनुजत्व	–	मानवता, आदमीयत
मनोकामना	–	मन की इच्छा
मनोरथ	–	मन की इच्छा
मनोरम	–	मन को अच्छा लगनेवाला, मन को रमानेवाला
मात देना	–	परास्त करना
मानुस	–	मनुष्य
मारक	–	मारनेवाला
माहिर	–	कुशल
मुकाबला	–	प्रतियोगिता, भिड़ंत
मुक्त	–	स्वतंत्र
मुखबिर	–	पुलिस को अपराधियों की सूचना देनेवाला
मुखर	–	अधिक बोलनेवाला
मुख्यतः	–	मुख्य रूप से
मुग्ध	–	मोहित होना
मुट्ठी में होना	–	वश में होना
मुठभेड़	–	टक्कर
....	–	....
मेहतर	–	सफाई करनेवाला
मोर	–	मेरा, मयूर
मोहक	–	मन को मोह लेनेवाला
....	–	....
....	–	....

मोहताज, मूर्छा, मौन, मंजु

य

....	–	....
यंत्रणा	–	पीड़ा, क्लेश
....	–	....
याचक	–	भिखारी, माँगनेवाला
....	–	....
यातना	–	अतिकष्ट, पीड़ा
....	–	....
युक्ति	–	उपाय
योगाभ्यासी	–	योग का अभ्यास करनेवाला
....	–	....
न्यारा	–	अलग, भिन्न

यम, योग्य, यंत्र, यान, याचना

र

....	–	....
....	–	....
रकम	–	धन, पैसा
रघुवंश	–	महाकवि कालिदास द्वारा रचित महाकाव्य, महाराज रघु की कथा
रफ्तार	–	गति
रसाल	–	आम
....	–	....
राजति	–	शोभायमान होते हैं
राष्ट्रीयता	–	राष्ट्र प्रेम की भावना
....	–	....
....	–	....
रिसाई	–	नाराज होना
रुँआँसी	–	रोने जैसे

राष्ट्र, रिक्त, राह, रंज, रंक

ल

लकुटि – लाठी, छड़ी
लखो – देखो
.... – ....
लामा – तिब्बत के बौद्ध भिक्षु, तिब्बती साधु
.... – ....
.... – ....
लिबास – वेश–भूषा
.... – ....
लेक – दर्रा
लैहों – लूँगी, पाऊँगी
.... – ....
.... – ....

लिखित, लीन, लोक, लवण, लायक, लोचन

व

वंदन – वंदना, वंदनवार
.... – ....
वाष्प इंजन – भाप से चलने वाला इंजन
विकल – व्याकुल
विकल्प – इसके बदले में
विख्यात – प्रसिद्ध, जाहिर
.... – ....
.... – ....
विद्यमान – उपस्थित, मोजूद
विधि – प्रकार, तरीके
.... – ....
विराटता – विशालता
विवश – लाचार, मजबूर
विस्मित – आश्चर्यचकित
विशेषज्ञ – विषय का जानकार
वैकल्पिक – इसके बदले में
वैदिक युग – जिस युग में वेदों की रचना की गई
वैजंतीमाल – एक प्रकार की माला जिसमें पाँच रंगो के फूल होते हैं। विजय माला
.... – ....
व्यर्थ – बेकार, फालतू
व्यस्त – किसी काम में लगा हुआ
व्यापक – जो सब जगह हैं
व्याप्त – फैली हुई, फैला हुआ, समाया हुआ

व्यंग्य, वियोग, विजयनाद, वाष्प, विगत

श

.... – ....
शंख – माप की इकाई, गणना की इकाई, एक समुद्री जीव का शरीर, जिसके मर जाने पर उसे पूजा आदि कार्य में बजाने के काम में लेते हैं
.... – ....
शतरंज – एक प्रकार का खेल
.... – ....
शरीरान्त – शरीर का अंत, मृत्यु, देहावसान
शारीरिक – शरीर संबंधी
.... – ....
शोभा – सौंदर्य
.... – ....
शौकीन – शौक करने वाला, किसी भी काम में अधिक रुचि रखने वाला।
श्मशान – मुर्दा जलाने का स्थान
.... – ....
श्रृंगार – साज, सज्जा
.... – ....
श्रेष्ठ – अच्छा

शौक, शैल, शंका, शत, शपथ, श्वेत, श्रेय,श्रोत

स

सँकरी – तंग, पतली
संकल्प – प्रण, प्रतिज्ञा
संकेत – इशारा
संग्रहीत – एकत्र की गई
संग्राम – युद्ध
.... – ....
संचालन – कार्यक्रम की प्रस्तुति

संजोग – सुअवसर
संसर्ग – साथ
संयंत्र – कारखाना
सकल – पूरा, सम्पूर्ण
सखी – सहेली
सचेत करना – चेतावनी देना
सतत् – हमेशा, लगातार
सत्कार – स्वागत
.... – ....
सदी – सौ वर्ष का समय
सदृश – के समान, उसके जैसे
सन्नाटा – खामोशी
सफर – यात्रा
समग्र – पूर्ण, पूरी
समर्पित – अर्पित करना, न्यौछावर करना
समाधि – शव को मिट्टी में गाड़ना
सम्मान – आदर
समुचित – सही तरीके से,
सरवर – तालाब, सरोवर
सर्वत्र – सब जगह
सर्वव्यापी – सब जगह रहनेवाला
सर्वाधिक – सबसे अधिक
सर्वोच्च – सबसे ऊँचा
सहचर – साथ चलनेवाला
सहभागिता – सहयोग, भागीदारी
सहमत होना – रजामंदी
सहृदयता – हृदय में दया करुणा का भाव
साँझ – सायंकाल
साँझ ढले – सूर्यास्त के बाद
सांत्वना – तसल्ली
.... – ....
साहब – स्वामी, प्रभु
साहस – हिम्मत
साहस छूट जाना – हिम्मत हारना
सिंह–पौर – सिंह की आकृतिवाला दरवाजा, महल का प्रवेश द्वार
सिर फुटव्वल – सिर फोड़ने जैसी भारी मारपीट
.... – ....
.... – ....
सुकुमार – कोमल
सुगीत – सुंदर गीत
.... – ....
सुरभि – सुगंधित वायु
सूक्ष्म – बहुत छोटा, कठिनाई से समझ में आने योग्य
सेहत – स्वास्थ्य
सैलानी – यात्री, घुमक्कड़, सैर करनेवाले
सौंदर्य – सुंदरता
सौर–ऊर्जा – सूर्य से प्राप्त होनेवाली शक्ति
स्निग्ध – चिकनाई युक्त
स्वर्गवास – मृत्यु, देहांत, स्वर्ग में रहना
स्वच्छंद – स्वतंत्र
स्वाँग रचना – भिन्न–भिन्न प्रकार के रूप बनाकर अभिनय करना।
स्मरण – याद
स्मरणशक्ति – याददास्त, याद रखने की शक्ति
स्नेह – प्रेम
स्नेहभाजन – प्रेमपात्र, प्रेम के हकदार

सिरहाने, सिर्फ, संघर्ष, सुभट, सार्थक, सदा

ह

.... – ....
हमार – हमारा
हरगिज – कभी भी
हल्ला मचना – शोर–शराबा होना
हाड़ी – बटलोही के आकार का मिट्टी का बर्तन
हाँसी – हँसी, ठिठोली
हाथ फैलाना – भीख माँगना, याचना करना
.... – ....
ह्रास – कम होना
हित – भलाई
हिम – बर्फ
हिमवृष्टि – बर्फ की वर्षा
.... – ....
.... – ....
हृदयग्राहिणी – हृदय में रखने योग्य
.... – ....
होणी – भविष्य में जो होना है
.... – ....

हुंकार, हास, होड़, हड़कंप, हेतु

ब्रेल एक परिचय

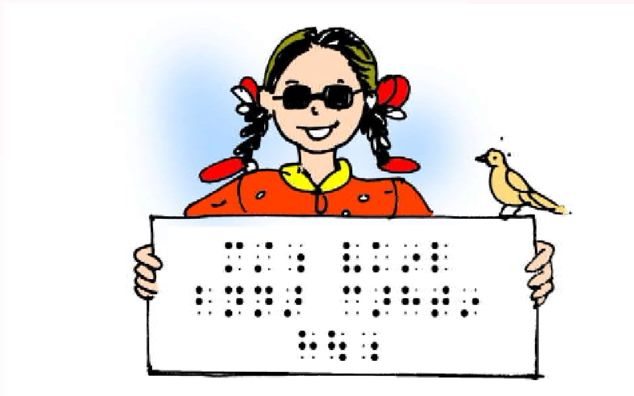

क्या आप जानते है यह क्या लिखा है

यह लिखा है –**मैं वकील बनना चाहती हूं।**

देवनागिरी, गुरूमुखी इत्यादि लिपियों की तरह ही ब्रेल भी एक लिपि है। ब्रेल लिपि का उपयोग दृष्टिहीन व्यक्तियों द्वारा पढ़ने एवं लिखने के लिये किया जाता है । ब्रेल लिपि का अविष्कार लुई ब्रेल द्वारा सन् 1829 में किया गया था । ब्रेल लिपि उभरे हुए छ: बिन्दुओं पर आधारित होती है, इन छ: बिन्दुओं से मिलकर एक सेल बनता है, प्रत्येक सेल में एक वर्ण (अक्षर) लिखा जाता है । ब्रेल लिखने के लिये स्टाइलस एवं विशेष प्रकार की स्लेट का उपयोग किया जाता है जिसमें छ:–छ: बिन्दुओं के कई सेल बने होते हैं इसे ब्रेल स्लेट कहा जाता है । ब्रेल स्टेल में मोटे कागज़ की शीट पर स्टाइलस के द्वारा लिखा जाता है । ब्रेल स्लेट की सहायता से ब्रेल लिपि में लिखते समय सीधे हाथ से उलटे हाथ की तरफलिखा जाता है जिससे की उभार दूसरी तरफ आते हैं। इन्ही उभारों को हाथ की उंगलियों की सहायता से छू कर पढ़ा जाता है । ब्रेल के छ: बिन्दुओं का क्रम इस प्रकार होता है ।

①④
②⑤ **इन छः बिन्दुओं को लेकर 63 अलग-अलग आकृतियां बनाई जा सकती है।**
③⑥ **कुछ आकृतियां निम्न प्रकार हैं**

ब्रेल बिन्दु

ब्रेल चार्ट

अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ए	ऐ	ओ	औ	अं
अः	ऋ	क	ख	ग	घ	ङ	च	छ	ज	झ
ञ	ट	ठ	ड	ढ	ण	त	थ	द	ध	न
प	फ	ब	भ	म	य	र	ल	व	श	ष
स	ह	क्ष	त्र	ज्ञ	ड़	ढ़				

नोट : उभारे हुए बिन्दुओं को यहां मोटे बिन्दुओं के रूप में दिखाया गया है।

Copyright © 2008 ARUSHI. All rights reserved.

यदि आपके घर में कोई श्रवणबाधित बच्चा हो तो-

- जैसे ही इस बात की शंका हो कि बच्चे को सुनने में कठिनाई है, कान बहना या दर्द है, तब तुरंत ही नाक, कान, गला विशेषज्ञ डाक्टर के पास जाएं तथा उपचार के विषय में चर्चा करें।
- कुछ मामलों में सुनने की समस्या का निराकरण सही समय पर दवाइयों के प्रयोग से तथा शल्य क्रिया की सहायता से किया जा सकता है।
- बहुत देर होने से कान की आंतरिक संरचना में क्षति पहुंचने से श्रवण दोष उत्पन्न हो सकता है।
- श्रवण दोष का पता चलते ही उसे विशेषज्ञ की सलाह से सही श्रवण यंत्र पहनाए।
- समय रहते बहरापन का पता लगाना अत्यंत महत्वपूर्ण है क्योंकि बच्चे के जीवन के आरंभिक वर्षों में उसका मस्तिष्क बहुत कोमल होता है वह भाषा बड़ी तेजी से सीखता है यदि बच्चे की सुनने की परेशानी को जल्दी न पहचाना जाए और उसकी समुचित सहायता न की जाए तो बच्चे की 0–7 वर्ष की अवस्था जो कि भाषा सीखने में बहुत ही महत्वपूर्ण होती है व्यर्थ चली जाती है। जितनी जल्दी विशिष्ट प्रशिक्षण आरम्भ होगा उतना ही भाषा को समझने व अपने आपको व्यक्त करने में वह सफल होगा।
- माता पिता अपने बच्चे को श्रवण यंत्र लगाकर विभिन्न आवाज़ों में भेद तथा पहचान करना सिखाएँ। विभिन्न आवाज़ों को पहचानने का प्रशिक्षण बहुत आवश्यक है।
- अलग–अलग आवाज़ें निकालकर बच्चों को उन्हें पहचानने के लिए प्रोत्साहित करें। उदाहरण के लिए जब कुत्ता भौंके अथवा बच्चा रोए तो साफ और ऊंचे स्वर में उससे कहें "कुत्ते की आवाज़ सुनो", "बच्चा रो रहा है" तथा अगली बार बच्चे से पूछें कि किसकी आवाज़ है और सही उत्तर देने पर उसे प्रोत्साहित करें।
- बच्चे से बात करते वक्त यह ध्यान रखें कि आपके मुंह में कुछ न हो जैसे पान, सुपारी आदि। बात करते वक्त धीरे व साफ बोलें जिससे वह आपके होंठों के संकेतों से भी बात समझने की कोशिश करेगा।
- एक और महत्वपूर्ण बात यह है कि श्रवण यंत्र को श्रवणबाधित बच्चा लगातार पहना रहे। तभी वह आवाज़ों को पहचान / समझ पायेगा।
- इशारों का प्रयोग जहां तक संभव हो कम करें तथा बात को बोलकर ही समझाएं। इससे बच्चा होंठ पठन के माध्यम से समझने में सक्षम होगा और जीवन में कहीं भी लोगों की बातें समझ सकेगा तथा अपनी बात समझा सकेगा।

Copyright © 2008 ARUSHI. All rights res

क्या आप जानते हैं इकबाल आपसे क्या कह रहा है?

इकबाल आपसे कह रहा है मैं कक्षा में प्रथम आया!

सांकेतिक भाषाः सामान्य परिचय

सांकेतिक भाषा का उपयोग श्रवण बाधित व्यक्ति द्वारा संप्रेषण हेतु किया जाता है। वाक् के अभाव में श्रवण बाधित सांकेतिक भाषा का उपयोग करते हैं। आमतौर पर लोगों की धारणा है कि सांकेतिक भाषा में व्याकरण का अभाव होता है परन्तु यह सही नहीं है, सांकेतिक भाषा में भी व्याकरण है। व्याकरण की दृष्टि से अमेरिकन सांकेतिक भाषा सबसे ज्यादा उन्नत है। अमेरिकन सांकेतिक भाषा फिंगर स्पेलिंग पर निर्भर है तथा वहां सिंगल हैण्डेड फिंगर स्पेलिंग का प्रयोग किया जाता है। इंडियन सांकेतिक भाषा में डबल हैंड़ेड फिंगर स्पेलिंग का प्रयोग किया जाता है। आइये अब हम डबल हैंड़ेड फिंगर स्पेलिंग जाने–